International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कमार कष्ण के कविता संग्रह “गाँव का बीजगणित' में व्यक्त ग्रामीण संवेदना

डॉ. मलकीयत सिंह

डॉ मलकीयत सिंह ,सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला | हिमाचल प्रदेश

हिन्दी-साहित्य की विकास यात्रा में संभवत: कविता ने ही सबसे ज्यादा सफर तय किया है अपने प्रांरभिक काल में यह युद्ध के मैदानों और चारण कवियों की वीरता में प्रस्फुटित हुई और अपने स्वर्णिम युग में पहुंच कर भक्तों की ईश्वरीय सत्ता की अभिव्यक्ति की वाणी बनकर प्रस्तुत हुई। कभी यह निर्गुण ईश्वर की अनुभूति करवाती तो भी सगुण का महिमामडन करती हुई आगे बढ़ी जो कालांतर में रीतिकालीन कवियों के हाथों में आकरराजदरबारों की शान बनी और सज संवरकर एव अलंकृत होकर सामने
आई। अपने आधुनिककालीन स्वरूप के पहले दौर में हिन्दी कविता राष्ट्रीयता की भावना और समाज सुधार के प्रण के साथ प्रांरम होकर नये सफर पर चल निकली जो महावीर प्रसाद द्विवेदी का सानिध्य पाकर परिष्कृत हुई और अपने रहस्यवादी और श्रृंगारिक स्वभाव को पुनः स्मरण करती हुई छायावादी कहलवाकर मुक्ति की ओर बढ़ी | छंद के बंध से मुक्त होते ही कविता की दृष्टि मजदूर, गरीब, शोषित, आम नागरिक पर पड़ी जो सदियों से दमित था। बैचारिक क्रांति के इस नये युग में कविता बहुत तेजी से बदली और समसामयिक युगीन परिस्थितियों और भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन की तुलनात्मक दृष्टि की भी वाणी बनी। सफर के इस पड़ाव मे कविता ने नयी प्रवृतियों में अपने विभाजन को देखा और लगभग हर रूप में अपना दायित्व निभाया। स्वातंत्रयोत्तर स्वरूप में कविता ने धूमिल और जगूड़ी का सानिध्य पाकर स्थापित आदर्शवाद के खण्डन और मोहभंग को देखा। फिर कई रूपों में फलित होती कविता, द्रुतगामी विकास और अंधाधुंध औद्योगिकीकरण, सूचना, सिनेमा आदि की चकाचौंध के बीच जैसे खो सी गई और 21वीं सदी में यह शहरीकरण और मोबाईल क्रांति में यह
अस्तित्वविहीन लगने लगी लेकिन क्या सचमुच कविता प्रभावविहीन हो गई?
शायद ऐसा नहीं है कविता रूपी तारामंडल तो पहले से भी अधिक घना होकर यहां प्रस्तुत हुआ लेकिन आधुनिकता की चकाचौंध में कुछ देर के लिए ओझल सा हो गया था। कहने का अभिप्राय है कि कविता आज भी लिखी जा रही है और बड़े स्तर पर लिखी जा रही है लेकिन क्या कविता अपने मूल उत्स को भूल गई है? जैस आधुनिक युग के तथाकथित शहरी और महानगरीय बासी मनुष्य ने गाँव को भुला दिया है। एक ऐसा दौर भी यहां आया जब शहरवासियों को अपना ही गांव अनपढ़ और गंवार लगता था। ग्रामीण रहन-सहन, खान-पान, गांव निर्मित वस्तुएं, शिल्प कला उपहास का कारण बनती थी। लकिन तीव्र विकास की इस अंधी दौड़ में 21वीं शताब्दी के 45-46 वर्षा में हम अपने आपको शायद फिर से गाँव से जुड़ा हुआ महसूस करते है।

शहर कया है? नगरीय बोध क्या है कया यहाँ गांव बिल्कुल ही नहीं है? गांव होना क्या हैं? उसका जीवन दर्शन है क्या ? क्या हम वास्तव में अपनी जड़ों से कट गये है। क्या हमारे खूबसूरत! घरों में गाँव का कोई भी
स्थान नहीं है। ऐसे असंख्य प्रश्नों का उत्तर देता हुआ कुमार कृष्ण द्वारा
लिखित कविता संग्रह “गांव का बीजगणित' मेरे समक्ष है, जो गांव की ठोस और नम जमीन का हमारे अंतर्मन को सीधा साक्षात्कार करवाता प्रतीत होता है।

गाँव का बीजगणित' कविता संग्रह सन 2000 में प्रकाशन संस्थान,दिल्ली से प्रकाशित हुआ है जिसमें कवि के चार कविता संग्रह, घमर, खुरों की तकलीफ, पहाड़ पर बदलता मौसम, डरी हुई जमीन की कविताएं,
संकलित हैं, जो संक्रमण की इस सदी में भी हमें सीधे गाँव से जोड़ती हैं
'छोटा सा गांव” कविता में कुमार कृष्ण कहते हैं कि उन्हें
शहर में हर जगह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

गाँव ही नज़र आया है-
"बनिये की बोरी में परखी से बिंधा-बिंधा
सुबह शाम मिला मुझे मेरा गाँव |
तोल रही तकड़ी पर, चीर रहे सरेआम
खुले मैदान में लगा रहे मोल-भाव
कपड़े के थान में इन्बच-इन्च कटता
धुनका हुआ मिला मुझे मेरा गाँव
ऊँची ईमारत पर चढ़ा हुआ दिन रात
कर रहा मजबूत घर /और आदमी
ऊन की दुकान पर सर्दी में कांपता
बदरंग मिला मुझे कम्बल में गाँव"
शहरी जीवन में भौतिक सुखों के पीछे अंधाधुंध भागते मशीनी मानव की तुलना में गाँव की जिजीविषा को व्यक्त करती हुई एक और कविता दृष्टव्य है-

"पहली बार बच्चे ने शहर आकर पूछा
गाँव किधर है बापू?
मैंने सामने उड़ते पक्षी की ओर इशारा किया
वह देखो-
पक्षी की चोंच के दाने में उड़ रहा है गाँव"
गाँव में भौतिकता के प्रति अंधा आकर्षण नहीं है वे तो एक पक्षी की भांति आजीविका और भरण-पोषण को सफलता मानते हैं। गाँव में चीजें पुरानी नहीं होती हैं वहां हर वस्तु का कोई न कोई पुनः प्रयोग खोज लिया जाता है वहां रिश्ते कैसे पुराने हो सकते हैं। यहां पुराने वस्त्रों को भी सहेजा जाता है। फटे पुराने वस्त्रों से सोने के लिए बनाया गया तलाई और रजाईनुमा गददा (लेवा) भी एक परिवार की पूरी वंशावली को सहेज कर
रखता है, जिसमें मां, दादी, दादा, बच्चें आदि के फट-पुराने वस्त्रों की यादों को सहेजा जाता है। कवि कहता है-
"दुनिया का सबसे खूबसूरत, सबसे कुरूप
सबसे दुर्बल, सबसे शक्तिशाली
दोस्त का नाम है लेवा
उसके पास पहुंचकर
मैं हमेशा महसूस करता हूँ
जिंदगी की गंध
मेरे घर की पूरी एलबम है लेवा
लेवा है परिवार का वश-वृक्ष
पूरे परिवार का भगवान।
लेवा / दादा-दादी, माँ-बाप, भाई बहन,
पत्नी और बच्चों के फटे-पुराने चीथड़ों का
अजमबघर है। जिसके पास मौजूद हैं-
अनगिनत सपने / कांपता हुआ आज |"3
बेशक हम आज मंहगे सुख-साधनों को एकत्र करके अपने आपको आधुनिक कहलवाना चाहते हो लेकिन एकदम से आधुनिक बना मनुष्य अब गाँव की ओर देखने लगा। उसे गाँव में (प्योरिटी) दिखाई देने लगी है?
आज चाहें आप कितने ही बड़े शहर में रहें चीजें सबको देशी चाहिए देशी घी, दूध, अनाज, फल आज तिगुनी कीमतों पर बिक रहे हैं। शहर का गाँव की ओर यह आकर्षण सहज है? उसे नीरस शहर के बनावटी संबंधों से ऊब होने लगी है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कुमार कृष्ण ने इसकी उद्घोषणा बहुत पहले ही कर दी
उन्होंने मानव में सुप्तावस्था में पड़े संस्कारों को पहचान कर घमर के माध्यम से कहा है-
"पूरी ताकत के साथ बजाता रहा वह नगाड़ा
अपने आँगन में
एक-एक करके जमा होते गये लोग
बच्चे-बूढ़े-आदमी औरतें
पूरा आँगन भर जाने पर
उसने अपने आप से कहा-
अभी शेष है मेरे नगाड़े की ताकत
नहीं भूला पूरा गाँव
आवाज की भाषा।"
कवि को गाँव के शहर में तबदील हो जाने की पीड़ा है उनका मानना है कि जब हमने मानव को या रिश्तों को देखने का मानवीय ग्रामीण नजरिया छोड़कर भौतिकवादी शहरी दृष्टिकोण अपनाया तभी से अधोमुखी संवेदनहीन संस्कृति उपजी। कवि कहते हैं-
"पहुँच गया एक दिन गाँव में शहर से आईना
सिर से पाँव तक खुद को देखने लगे लोग
गाँव के लोगों को देखने लगा शहर का आईना
करने लगा सबको गिरफ्तार बारी-बारी
भूल गये लोग उसकी गिरफ्त में आकर
चेहरे का सच
भूल गये लोग थाली का घेरा
पानी की पारदर्शिता।"4

आधुनिक युग तथाकथित चिन्तन और मनन का युग है बुद्धिजीवियों
का एक फौज तैयार हो गई है।
ऐसे में कर्मशील गाँव क्या करता है ? कवि कहते हैं-
"बाजार से लैटा हुआ आदमी
पड़ोसी के घर में
गोश्त की तरह कट कट कर बिकने वाली»
डबलरोटी को /दस फूट के फासले से देखता है
तकड़ी और बही को दोस्ती महसूसता हुआ
खीसे के रूपये की औकात के बारे में सोचने /
लगता है।
विदेश यात्रा से लौटा हुआ राजा
नहीं सोचता कुछ भी;
वह लौट जाना चाहता है फिर से विदेश
यात्रा पर
खेत से लौटा हुआ किसान
बीज और पृथ्वी के रिश्ते के बारे में
सोचता है और
हल के फाल को आगे के हवाले कर देता है।"6

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कुमार कृष्ण कहते हैं कि ग्रामीण संवेदनात्मक स्वरूप उनके भीतर संस्कार रूप में विद्यमान है "वह अच्छी तरह जानते हैं बर्फ का बीजगणित,पटटू का इतिहास, पुआल का ताप, देवदारू के जीवनानुभव की गरमाहट,खेत खलिहान, पगडण्डियों का व्याकरण, बैलों के कंधे की सूजन, घराट का पसीना, कठफोड़े की भूख, चरवाहों के गीत, पत्तल चाटती औरत की गजल,प्रवासी मजदूरों की रिश्तों की गरमाहट ,पानी के पत्थरों का दर्द, फटे पांवों
की पीड़ा, मिट्टी की बौखलाहट, बीज की बेचैनी, खूँट से बांधा बैल, खुरों की तकलीफ है। यहां जिजीविषा का संघर्ष हैं उसे सौंदर्यवोध से कोई लेना देना नहीं है। 'सीढ़ियों का शहरः शिमला' कविता में कवि कहता है-
"यहां / ठंड से सिकुड़ा आदमी
कम्बल क पास होता या आग के पास
तुम जिस पेड़ की तस्वीर उतारते हो
वह उसी के सूखने का इंतजार करता है।"
कवि साहित्यकारों का आहवान करता है कि गाव की जिजीविषा और बंधुत्व भावना को बचा लो। दर्शन की गुत्थियों को खोलने की अपेक्षा
गाँव की और लौटी कवि कहते है-
"गन्ने की तरह गांठदार
अमरूद की तरह अनगिनत बीजवाली
लिखो तुम कविताएं बेशुमार
वर्णमाला के अक्षरों में
अ से ज्ञ तक
बचा लो मेरे दोस्त,
पृथ्वी की मिठास |
उनका दूसरा कविता संग्रह 'पहाड़ पर नदियों के घर' भी कुमार कृष्ण की ग्रामीण संवेदना उभर कर सामने आई है। कवि आधुनिकता की दौड़ में पड़े मानव के पीछे की सच्चाई जानता है कवि बड़े घरों में नींद न आने की बीमारी का कारण जानता है अब घर तो खूबसूरत बन गये हैं

लेकिन उनमें से प्रेम, विश्वास और खुशियाँ कही गायब हैं। कवि कहते हैं-
"खूबसूरत घरों में
बहुत कम रहते हैं खूबसूरत लोग
खूबसूरत घरों क दरबाजे
कभी नहीं थपथपाती उंगलियां
वे फाँक भर खुलते हैं घंटी की आवाज पर
हो जाते हैं बंद खुद-ब-खुद
खूबसूरत घरों में नही रहते-
पीतल के लोटे, कांसे के कटोरे
मिट्टी के घड़े, खील बताशे
वहां नहीं रहती गंगाजल की बोतल
गीता रामायण
राधा कृष्ण, शिव के कैलेण्डर
वहां नहीं उगता तुलसी का पौधा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

वहां बच्चे नहीं सुनते
लालटेन की रौशनी में दादी की कहानियां
वे नहीं जानत गुदड़ी के सपने
सुना हैं /नींद न आने की बीमारी से
बीमार होते हैं तमाम खूबसूरत घर।
निष्कर्ष रूप में कहें तो कुमार कृष्ण की कविताएँ मानव संवेदना को प्राणवायु देती हुई प्रतीत होती है जो शहरी और भौतिकतावादी मानसिकता में कही घुटती जा रही है। कुमार कृष्ण व्यापक संवेदनहीनता की तुलना में अपनी कुछ कविताओं के प्रभाव को कम नहीं आंकते बल्कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि आंगन भर लोग दुनियां में मानवता की संचार करने के लिए काफी हैं।

“आंगन भर लोग' कविता यहां प्रस्तुत है-
“मुट्ठी भर तिनके
जब भी होते हैं तबदील झाड़ू में
साफ हो जाते है घर
सड़क, गली मुहल्ले सभी कुछ
बहुत है आँगन भर लोग
जमीन की शक्ल बदलने को |”
अंत में कहा जा सकता है कि यह कविताएँ गाँव के माध्यम से
समूची मानवता को आपसी प्रेम, छोटे-छोटे विश्वास और जीवन का संदेश देती है।
डॉ मलकीयत सिंह
सहायक प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला
हिमाचल प्रदेश |
संदर्भ ग्रंथ सूची
. कुमार कृष्ण - गांव का बीजगणित', पृ. 34
वही, पृष्ठ 34
वही, पृष्ठ-47
वही, पृष्ठ-46
वही, पृष्ठ-24
वही, पृष्ठ--25
वही, पृष्ठ-34
पृष्ठ--97
वही, पृष्ठ-4॥
वही, पृष्ठ-40